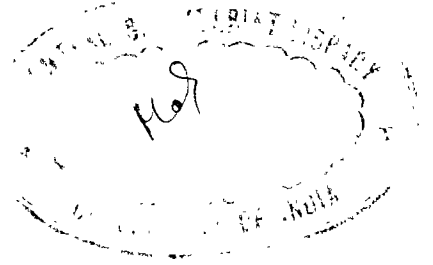




भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITYसं. 214]
No. 214]नई दिल्ली, मंगलवार, अप्रैल 11, 2000/चैत्र 22, 1922
NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 11, 2000/CHAITRA 22, 1922

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 अप्रैल, 2000

सं. 34/2000-केन्द्रीय उत्पादशुल्क (एन.टी.)

सा.का.नि. 332(अ).— केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पादशुल्क अधिनियम, 1944 |1944 का 1। की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय उत्पादशुल्क नियम, 1944 |जिसे इसके आगे उक्त नियम कहा जाएगा। का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है अर्थात् :-

1. इन नियमों का संक्षिप्त नाम केन्द्रीय उत्पादशुल्क |छठा संशोधन। नियम, 2000 है।
2. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 |जिन्हें उसके पश्चात् उक्त नियम कहा गया है। के नियम 49 के उपनियम 1। के खंड 1क। के स्थान पर निम्नलिखित खंड रखे जायेंगे, अर्थात्,-

1। 1क। हर विनिर्माता, किसी वित्तीय वर्ष में निकासियों के मूल्य पर आधारित किसी अधिसूचना के अधीन छूट की सुविधा प्राप्त करने वाले विनिर्माता के अलावा, उत्पाद शुल्क माल के, नियम 9 के तहत लिखे स्थान या परिसर अथवा नियम 47 के तहत समाहर्ता द्वारा स्वीकृत गोदाम या भंडारण स्थल से, निकासियों के संबंध में उत्पाद शुल्क दायित्व का,

ii। महीने के पहले पखवाड़े के दौरान, महीने के 20 तारीख तक,

iii। महीने के दूसरे पखवाड़े, मार्च महीने के अलावा, के दौरान, अगले महीने के 5 तारीख तक निर्वहन करेगा

iii। मार्च के दूसरे पखवाड़े के दौरान निम्न विधि से उत्पाद शुल्क को निर्वहन करेगा

II। विनिर्माता, 31 मार्च तक, नीचे लिखे रकम

1क। मार्च की पच्चीस तारीख तक के निकासियों से संबंधित शुल्क की रकम;

1ख। मार्च के शेष छह दिनों के लिये उपर 1क। के आधार पर आनुपातिक रकम; के जोड़ के बराबर रकम अदा करेगा

II। उपर लिखे विधि से अदा किया गया रकम

।क। यदि मार्च के दूसरे पखवाड़े के उत्पाद शुल्क दायित्व से कम हो तो बकाया रकम उस वर्ष के माह के 20 तारीख तक विनिर्माता अदा करेगा;

।ख। यदि मार्च के दूसरे पखवाड़े के उत्पाद शुल्क दायित्व से ज्यादा हो तो विनिर्माता, अदा की गई अधिक राशि अप्रैल के पहले पखवाड़े या यदि ऐसा अप्रैल के पहले पखवाड़े में करना न संभव हो तो उसके बाद के किसी पखवाड़े के उत्पाद शुल्क दायित्व के बावत समायोजित कर सकेगा ।

उदाहरण II। एक विनिर्माता 16.3.2001 से 25.3.2001 के दौरान 90 लाख रुपये का माल एवं 26.3.2001 से 31.3.2001 तक 60 लाख रुपये का माल की निकासी करता है । माना कि शुल्क की दर 16 प्रतिशत है, यह विनिर्माता 31 मार्च 2001 तक 14.40 लाख + 8.64 लाख [90X6X0.16] रुपये अदा करेगा । यह विनिर्माता शेष उत्पाद शुल्क दायित्व की राशि 0.96 लाख रुपये, 20 अप्रैल 2001 तक अदा करेगा ।

।II। एक विनिर्माता 16.3.2001 से 25.3.2001 के दौरान 90 लाख रुपए के माल तथा 26.3.2001 से 31.3.2001 तक में 50 लाख रुपये के माल की निकासी किया । माना शुल्क दर 16 प्रतिशत है, यह विनिर्माता 31 मार्च 2001 तक 14.40 लाख + 8.64 लाख [90X6X0.16] रुपये अदा करेगा । यह विनिर्माता 0.64 लाख रुपये की रकम अप्रैल के पहले पखवाड़े या उसके बाद के किसी पखवाड़े में उत्पाद शुल्क दायित्व के निर्वहन के लिये उपयोग कर सकेगा

।कक। किसी वित्तीय वर्ष में निकासियों के मूल्य पर आधारित किसी अधिसूचना की अधीन छूट की सुविधा प्राप्त करने वाला हर विनिर्माता किसी कैलेंडर मास के दौरान की गई निकासियों की बाबत अपने उत्पाद शुल्क दायित्व का निर्वहन अगली मास की पन्द्रह तारीख तक करेगा ।

स्पष्टीकरण,— शंका दूर करने के लिये, यह स्पष्ट किया जाता है कि खंड ।क। अथवा खंड ।कक। में शुल्क दायित्व उस दशा में निर्वहन की गई मानी जायेगी जबकि देय रकम केन्द्र सरकार के खाते में उक्त दिवस तक में जमा की गई हो ।

उक्त नियम के नियम 173 छ के के उपनियम ।1। के खंड ।क। के स्थान पर निम्नलिखित खंड रखे जायेंगे, अर्थात्,—

।1। ।क। हर विनिर्माता, किसी वित्तीय वर्ष में निकासियों के मूल्य पर आधारित किसी अधिसूचना के अधीन छूट की सुविधा प्राप्त करने वाले विनिर्माता के अलावा, उत्पाद शुल्क माल के, नियम 9 के तहत लिखे स्थान या परिसर अथवा नियम 47 के तहत समाहर्ता द्वारा स्वीकृत गोदाम या भंडारण स्थल से, निकासियों के संबंध में उत्पाद शुल्क दायित्व का,

i। महीने के पहले पखवाड़े के दौरान, महीने के 20 तारीख तक,

ii। महीने के दूसरे पखवाड़े, मार्च महीने के अलावा, के दौरान, अगले महीने के 5 तारीख तक निर्वहन करेगा

iii। मार्च के दूसरे पखवाड़े के दौरान निम्न विधि से उत्पाद शुल्क को निर्वहन करेगा

।I। विनिर्माता, 31 मार्च तक, नीचे लिखे रकम

।क। मार्च की पच्चीस तारीख तक के निकासियों से संबंधित शुल्क की रकम;

।ख। मार्च के शेष छह दिनों के लिये उपर ।क। के आधार पर आनुपातिक रकम; के जोड़ के बराबर रकम अदा करेगा

।II। उपर लिखे विधि से अदा किया गया रकम

।क। यदि मार्च के दूसरे पखवाड़े के उत्पाद शुल्क दायित्व से कम हो तो बकाया रकम उस वर्ष के माह के 20 तारीख तक विनिर्माता अदा करेगा;

।ख। यदि मार्च के दूसरे पखवाड़े के उत्पाद शुल्क दायित्व से ज्यादा हो तो विनिर्माता, अदा की गई अधिक राशि अप्रैल के पहले पखवाड़े या यदि ऐसा अप्रैल के पहले पखवाड़े में करना न संभव हो तो उसके बाद के किसी पखवाड़े के उत्पाद शुल्क दायित्व के बावत समायोजित कर सकेगा ।

उदाहरण ।। एक विनिर्माता 16.3.2001 से 25.3.2001 के दौरान 90 लाख रुपये का माल एवं 26.3.2001 से 31.3.2001 तक 60 लाख रुपये का माल की निकासी करता है । माना कि शुल्क की दर 16 प्रतिशत है, यह विनिर्माता 31 मार्च 2001 तक 14.40 लाख +8.64 लाख [90X6X0.16] रुपये अदा करेगा । यह विनिर्माता शेष उत्पाद शुल्क दायित्व की राशि 0.96 लाख रुपये, 20 अप्रैल 2001 तक अदा करेगा ।

II। एक विनिर्माता 16.3.2001 से 25.3.2001 के दौरान 90 लाख रुपए के माल तथा 26.3.2001 से 31.3.2001 तक में 50 लाख रुपये के माल की निकासी किया । माना शुल्क दर 16 प्रतिशत है, यह विनिर्माता 31 मार्च 2001 तक 14.40 लाख + 8.64 लाख [90X6X0.16] रुपये अदा करेगा । यह विनिर्माता 0.64 लाख रुपये की रकम अप्रैल के पहले पखवाड़े या उसके बाद के किसी पखवाड़े में उत्पाद शुल्क दायित्व के निर्वहन के लिये उपयोग कर सकेगा

।कक। किसी वित्तीय वर्ष में निकासियों के मूल्य पर आधारित किसी अधिसूचना की अधीन छूट की सुविधा प्राप्त करने वाला हर विनिर्माता किसी कैलेंडर मास के दौरान की गई निकासियों की बाबत अपने उत्पाद शुल्क दायित्व का निर्वहन अगली मास की पन्द्रह तारीख तक करेगा । स्पष्टीकरण,— शंका दूर करने के लिये, यह स्पष्ट किया जाता है कि खंड ।क। अथवा खंड ।कक।में शुल्क दायित्व उस दशा में निर्वहन की गई मानी जायेगी जबकि देय रकम केन्द्र सरकार के खाते में उक्त दिवस तक में जमा की गई हो ।

[फा. सं. बी-4/6/2000-टी.आर.यू.]

प्रशान्त कुमार सिन्हा, अवर सचिव

टिप्पण : मुख्य नियम भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचना सं IV D-CE तारीख 28 फरवरी, 1944 द्वारा प्रकाशित की गई तथा इसका अंतिम संशोधन वित्त मंत्रालय राजस्व विभाग की अधिसूचना 31/2000-तारीख 31 मार्च, 2000 सा.का.नि. 302 ।अ।, तारीख 31 मार्च, 2000 द्वारा किया गया ।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th April, 2000

No. 34/2000-Central Excise (N.T.)

G.S.R. 332(E).— In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Central Excise Rules, 1944, namely:-

1. These rules may be called the Central Excise (Sixth Amendment) Rules, 2000.

2. In rule 49 of the Central Excise Rules, 1944 (hereinafter referred to as the said rules), in sub-rule (1), for clause (a), following shall be substituted, namely,-

“(1) (a) Every manufacturer, other than a manufacturer who is availing of the exemption under a notification based on value of clearances in a financial year, shall discharge his duty liability in respect of clearances of excisable goods from the place or premises specified under rule 9 or from a store room or other place of storage approved by the Commissioner under rule 47 made:-

(i) during the first fortnight of the month, by the twentieth day of that month;

- (ii) during the second fortnight of the month, other than the month of March, by the fifth day of the succeeding month; and
- (iii) during the second fortnight of March, in the following manner, namely:-
 - (I) the manufacturer shall pay, by the 31st day of March, a sum equal to the aggregate of –
 - (A) the amount of duty payable on actual clearances made upto the twenty fifth day of March; and
 - (B) an amount calculated, for the remaining six days of March, pro-rata of the actual duty payable under (A) above.
 - (II) Where the payment made in the manner specified in sub-clause (I) above,-
 - (A) is less than the actual duty liability for the said second fortnight of March, the manufacturer shall pay the balance amount of duty by the twentieth day of April of that year;
 - (B) is more than the actual duty liability for the second fortnight of March, the excess amount may be adjusted against the duty liability for the first fortnight of the month of April of that year and where such adjustment is not possible for any reason, against the duty liability for any subsequent fortnight.

Illustration I. A manufacturer clears goods worth Rs 90 lakhs during the period from 16-3-2001 to 25-3-2001 and goods worth Rs. 60 lakhs during the period from 26-3-2001 to 31-3-2001. Assuming that the rate of duty is 16% ad valorem, the manufacturer shall pay a sum of Rs. 14.4 lakhs plus Rs.8.64 lakhs [$(90/10) \times 6 \times 0.16$] by 31-3-2001. The manufacturer shall pay the balance of duty liability of Rs.0.96 lakhs (Rs.24 lakhs minus Rs.23.04 lakhs) by 20-4-2001.

Illustration II. A manufacturer clears goods worth Rs.90 lakhs during the period from 16-3-2001 to 25-3-2001 and goods worth Rs. 50 lakhs during the period from 26-3-2001 to 31-3-2001. Assuming that the rate of duty is 16% ad valorem, the manufacturer shall pay a sum of Rs. 14.4 lakhs plus Rs.8.64 lakhs [$(90/10) \times 6 \times 0.16$] by 31-3-2001. The manufacturer is eligible to utilize the excess payment of Rs.0.64 lakhs as adjustment against the duty liability for the first fortnight of April or any subsequent fortnight.

(aa) Every manufacturer availing of the exemption under a notification based on the value of clearances in a financial year shall discharge his duty liability in respect of clearances made during a calendar month, by the fifteenth day of the succeeding month.

Explanation.- For removal of doubts, it is hereby clarified that the duty liability under clause (a) or clause (aa) shall be deemed to have been discharged only if the amount payable is credited to the account of the Central Government by the date specified.”.

3. In rule 173G of the said rules, in sub-rule (1), for clause (a), following clause shall be substituted, namely:-

“(1) (a) Every manufacturer, other than a manufacturer who is availing of the exemption under a notification based on value of clearances in a financial year, shall discharge his duty liability in respect of clearances of excisable goods from the place or premises specified under rule 9 or from a store room or other place of storage approved by the Commissioner under rule 47 made:-

- (i) during the first fortnight of the month, by the twentieth day of that month;
- (ii) during the second fortnight of the month, other than the month of March, by the fifth day of the succeeding month; and
- (iii) during the second fortnight of March, in the following manner, namely:-

- (I) the manufacturer shall pay, by the 31st day of March, a sum equal to the aggregate of –
 - (A) the amount of duty payable on actual clearances made upto the twenty fifth day of March; and
 - (B) an amount calculated, for the remaining six days of March, pro-rata of the actual duty payable under (A) above.

- (II) Where the payment made in the manner specified in sub-clause (I) above,-
 - (A) is less than the actual duty liability for the said second fortnight of March, the manufacturer shall pay the balance amount of duty by the twentieth day of April of that year;

(B) is more than the actual duty liability for the second fortnight of March, the excess amount may be adjusted against the duty liability for the first fortnight of the month of April of that year and where such adjustment is not possible for any reason, against the duty liability for any subsequent fortnight.

Illustration I. A manufacturer clears goods worth Rs 90 lakhs during the period from 16-3-2001 to 25-3-2001 and goods worth Rs. 60 lakhs during the period from 26-3-2001 to 31-3-2001. Assuming that the rate of duty is 16% ad valorem, the manufacturer shall pay a sum of Rs. 14.4 lakhs plus Rs.8.64 lakhs $[(90/10) \times 6 \times 0.16]$ by 31-3-2001. The manufacturer shall pay the balance of duty liability of Rs.0.96 lakhs (Rs.24 lakhs minus Rs.23.04 lakhs) by 20-4-2001.

Illustration II. A manufacturer clears goods worth Rs.90 lakhs during the period from 16-3-2001 to 25-3-2001 and goods worth Rs. 50 lakhs during the period from 26-3-2001 to 31-3-2001. Assuming that the rate of duty is 16% ad valorem, the manufacturer shall pay a sum of Rs. 14.4 lakhs plus Rs.8.64 lakhs $[(90/10) \times 6 \times 0.16]$ by 31-3-2001. The manufacturer is eligible to utilize the excess payment of Rs.0.64 lakhs as adjustment against the duty liability for the first fortnight of April or any subsequent fortnight.

(aa) Every manufacturer availing of the exemption under a notification based on the value of clearances in a financial year shall discharge his duty liability in respect of clearances made during a calendar month, by the fifteenth day of the succeeding month.

Explanation.- For removal of doubts, it is hereby clarified that the duty liability under clause (a) or clause (aa) shall be deemed to have been discharged only if the amount payable is credited to the account of the Central Government by the date specified.”.

[F. No. B-4/6/2000-TRU]

PRASHANT KUMAR SINHA, Under Secy.

Note : The principal rules were published in the Gazette of India vide notification No. IV D-CE, dated the 28th February, 1944 and subsequently amended by Ministry of Finance(Department of Revenue) notification No.31/2000 –Central Excise (N.T.) dated the 31st March, 2000 vide GSR No.302 (E) dated the 31st March, 2000.

